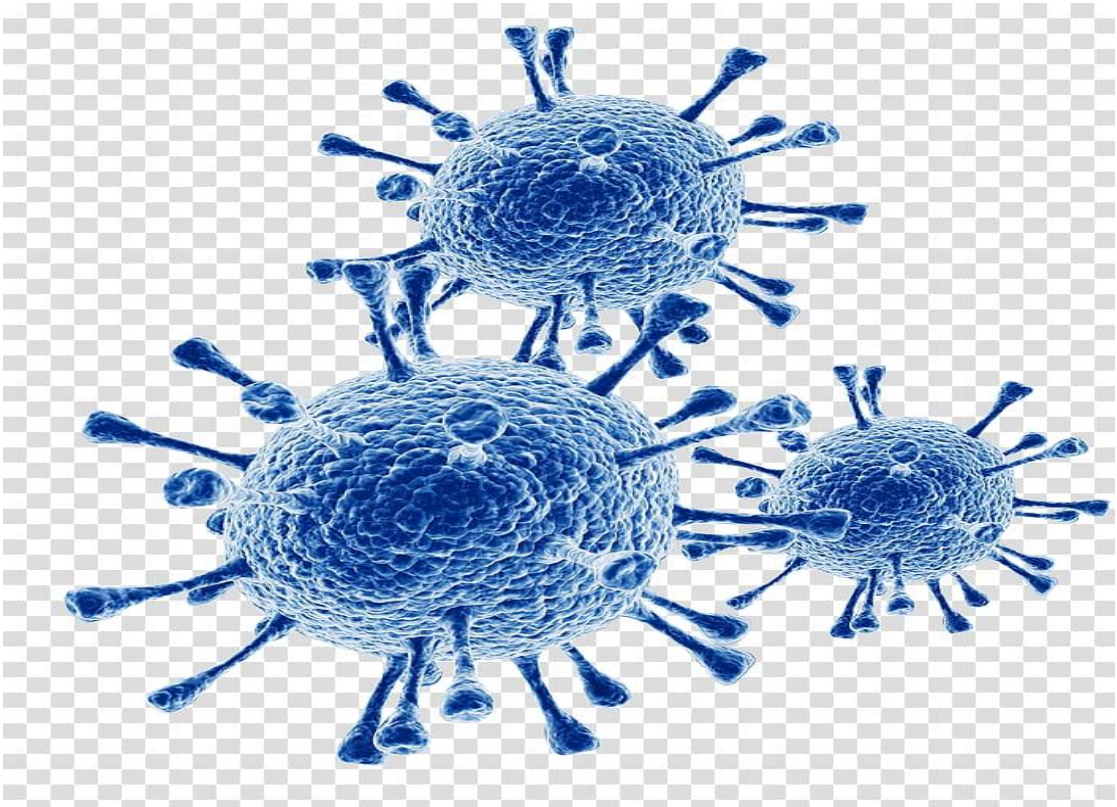

CHUIMUIYA KARONA GOL-MATOL

छुईमुइया करोना गोल-मटोल

(Short story : **BHOJPURI)**

Author : **Hiralall Leeladhur**

Author's details

Name : **Mr. Hiralall**

Surname: **Leeladhur**

DOB : **25/06/1951**

NIC No. : **L2506511303831**

Res. Add.: **Bhujun Lane, Lallmatie, Mauritius**

Status : **Retired**(DHT Primary)

E-mail : hiralall_leeladhur@yahoo.com

Mob. : 57192179

CHUIMUIYA KARONA GOL-MATOL

छुईमुइया करोना गोल-मटोल

(Short story : **BHOJPURI)**

(**भोजपुरी** कहानी)

Author : **Hiralall Leeladhur**

लेखक : **श्री हीरालाल लीलाधर**

छुईमुइया करोना गोल-मटोल

(**भोजपुरी** कहानी)

लेखक - **श्री हीरालाल लीलाधर**

फजरे-फजरे भजना महावीरस्वामी के चउतरा पर पूजा-अर्चना करत बा। ऊ हाथ उपरे उठाके गोहार कइलक - "हे बजरंगबली! हे संकटमोचन! तोहर आँख के सामने ई का राज होवऽता? सब जगह त्राहि माम! त्राहि माम! आज गरीब त गरीब, सम्पन्न देशो घुटना टेक देले बा। सब भौंचक्का। प्रतिकार के कवनो उपाये नइखे, जइसेके सबके मति मार गइल बा।"

भजना रोज राजो-तेलेविजियों में दुनियाभर में करोना वायरस के मार देखे-सुनेला। काल्ह साँझके जब प्रधानमन्त्री के बयान से पता चलल, के मॉरीशसो में करोना के तीनगो मरीज हो गइल बा, त ओकर दिल में थरथरी धर लेलक। ऊ थरथरी के दूर करे खातिर ओकराके एकेगो आसरा सूझल, बजरंगबली।

भजना भाव में एतना घनीभूत रहल, के ओकर मनके बात स्वर के रूप लेके माहौल में फइल गइल। ऊ स्वर उधरसे जात रहल देवके कान में गइल अउर प्रतिक्रिया ई आइल - "रोवेके का? बजरंगबली का करियन? नियम त नियम होला। सब खातिर एकेगो।"

"हें!" भजनो के मनमें प्रतिक्रिया भइल - "हिंया आदमी जानके लाले पड़ल बा अउर ई केकराके मस्करी सूझल बा?"

देव के बात बेजाईं ना रहल। नियम सब खातिर एकेगो होला, माकिर भजना के मगज में ई ना धँसल। धँसत कइसे, मगज में त घबराहट के चद्दर पड़ गइल बा। मनमें शान्ति रही, तबे कोई सुने अउर सोचेके जोग रही।

भजना के मनमें फेरो प्रतिक्रिया भइल - 'फलके जेतना-तेतना से बजरंगबली के का सम्बन्ध? ई त मानव के बेवहार होला। सबके अपन करम-फल।' मन तनी शान्त भइल। ऊ बजरंगबली के धियान खेंचे चहलक, के धियान आइल, 'ईं हम का करत हईं? बजरंगबली के बूर्बक समझत हईं? उनकर धियान खेंचेके का चाहीं? ऊ त अगमज्ञानी हवन? हमार भीरू मन बात के बेकारे बतंगढ़ बनावता। बजरंगबली बंद अँखियनों से सबमें झाँक लेवेलन। हमरा के भेंड़ा बनेके नई चाहीं। सब कोई अपन करम-फले भोगत बाड़न अउर अगहूँ भोगल जाई।

माकिर कबो जाँता में दालके संगे घुनो दरा जाला, ई जानके सबके चाहेंला सम्हले रहेके।'

हाँ, कबो निर्दोषो सजायाब हो जाला। दालके संगे घुन पिसा गइल, त एम्में दाल अउर जाँता के का दोष? घुनके के बोलले रहल दाल में घुसके रहेके?

हम मानीं, के पेट सबके बा। भोग सबके चाहीं। सीमा में सब नीके रही, पर जब कोई सीमा पार करी, त फलो पड़ी भुक्तेके।

अउर मऊत जेकर भरपाई ना हो सकी, चाहे पुरान में विष्णु और महादेव कोई विशेष के कर देले हवन जा, बाकिर सीमा पार ई मृत्युलोक में इहे एगो सच बा।

ई करोना सबके चेता देले बा। सभे छनेछन-मनेमन अपन इष्ट-देव के गोहार करे लागल हवन जा।

"गोहार त तूहे करत हउए।" देव के आवाज बुलंद भइल। ऊ आगे बोललस, "तोर मगज फेर गइल बा। जिनगी में मऊत के गोहार सुनत हउए। जिनगी में मऊत। आदमी मुसाफिर, जिनगी सफर अउर मऊत मुसाफिर-खाना। जे ई बूझ जाई, ऊ अपन सफर के छनेछन मजे में जिही, चाहे महामारियो के

राज रही।"

ई भयंकर महामारी के डर से पूरा देश में कुव्र-फ़े चालू बा। सब कोई के शरमे-लाजे मुँह ढाँप के अपन डेरे पर रहेके सरकारी आदेश बा। अइसन परिस्थिति में देव के हास-परिहास भजना के तनिको ना सुहाइल। ऊ बोललक, "तोर मुँह लगके हम अपन मुँह खराब करत हईं। तोर बात सुनके बजरंगबलियो दुविधा में पड़ जयन।
राम-राम।"

"ठीके बा। तू राम-राम करत रऊ। बजरंगबली तोर गोहार सुने लियन। राम-राम।" बोलके देव अपन रास्ता आगे ले लेलस।

देव के अनुपस्थिति में भजना चहल-कदमी कइले अन्तर्मन भइल - ना आगा अउर ना पीछा, बस धूर में लोटे गदहा। पलवार के बिना ऊ कइसे जानी-बूझी, के घरके मुखिया के साँस घरके आउर लोगन के सँसियन पर टिकल रहेला। ओके छने-छन सबके सुख-सुविधा अउर दुःख-दरद के चिंता रहेला।

उधर से चंदा गुजरत रहल। ऊ भजना के राम-सलाम करके तनी नगीच आइल। भजना ओकरा रोकके बोललक, "तनी दूरे से।"

चंदो के जइसे स्मरण आइल। ऊ बोललस, "अरे हाँ। सोसियल, ना फीजिकल डिस्टेंसिंग। पर भैया! ई अकेले में तू का बड़बड़ात रहलऽ?"

भजना के ई खयाले ना रहल, के ओकर मनके बात शब्द के रूप ले लेल होई। ऊ चंदा के सुनके तनिक लज्जा अनुभव कइलक। भजना के मुर्झात चेहरा के देखके चंदा फेरो बोललस, "अच्छा, त तू बजरंगबली से बतियात रहलऽ। पर भैया! बजरंगबली से बोलेके का चाहीं? ऊ त अगमज्ञानी हवन। मनके बात जान लेवेलन।"

जवाब में भजना बोललक, "हाँ, ऊ अगमज्ञानी हवन। मनके बात जान लेवेलन, बाकिर हमनी के कोशिश त चाहीं करेके। जबले लइका ना रोई, माइयो दूध ना पियावेला।"

"हम चलीं।" चंदा बिना उत्तर देले अपन रास्ता आगे निकल गइल। फेर भजना के मनमें प्रतिक्रिया भइल। आजकाल्ह के जवान सोचेलन स, के सब मने से हो जाला। मानीं, के मनमें विचार आवेला, सरधा उत्पन्न होवेला अउर विश्वासो पक्का होला, बाकिर सब करमे में लऊकेला। सब कोई, चाहे ऊ भगवाने रही, करमे देखेलन जा। करमे के फल निकलेला। ऊ मीठा-खट्टा, तीता-कस्सा, कड़ुआ भा नोन, सबके अपन भोग लागेला। भजना मनके प्रतिक्रिया में भरमार रहल, के ओकर मेहरारू मंगला आवाज देले डेरा से निकलल---

"केकर से एतना बतियात हवऽ?" भजना के अकेले देखके ऊ आगे बोललक, "हें! अकेले बड़बड़ात रहलऽ, के महाबीरस्वामी के गोहार करत रहलऽ? जबे कोई से बतययबऽ, त मुँह पर मास्क लगा लियऽ। राजो अउर तेलेबिजियों में रोज सुनत-देखत हवऽ न। हरदमे दूर-दूरे रहियऽ। ई छुईमुइया करोना के कवनो रूप-रंग आ अता-पता नई लऊकेला। ऊ कब केकरो से आके धर-दबोच लेई सकी। नाम करो ना, पर सबके करके रख देवऽता।"

"भागवान! हम आदमी का, बजरंगबलियो से दू गज दूरे हईं।"

मंगला के ई जवाब-देही पसीन ना आइल। ऊ बोललक, "परिहास के बेर नई बा। जब ई छुईमुइया ईसा के वातिकन, मुहम्मद के मक्का अउर हरि के हरद्वारो के सूना कर देलेबा, त हम आदमी के का बिसात?"

तब भजना मंगला के इत्मीनान से समझयलक, के ई छुईमुइया में खाली दोषे नई, गुणो बाटे। ऊ बहराके सूना करके डेराके आबाद कर देलेबा। आदमी पइसा अउर प्रगति के जोर डेराके भुला गइल रहल। करोना सबके स्मरण करावत बा, के हमनी के स्वास्थ्य घरही के रूखा-सूखा भोजन में बा। एहिजे हमनी के सुरक्षो बा।

मंगला प्रतिकार में बोललक, के जदि कोई मिन्तर अभी चल आई, त ओकर पूँछ-लगू बनके भजना सीमा बगल चले जाई, जेकर जवाब में भजना ई कहलक, के मिन्तर मिन्तर होला। अवहेलना नई चाहीं करेके।

मंगला फेरो बोललक---"हम बोलत हईं। द्वारी-द्वारी नई चाहीं छुछआईके। ई महामारी के फइलावके रोके खातिर सबके अपन डेरावे पर रहेके चाहीं।"

"वाह भागवान! वाह!" तू त हमरो कुक्कुर बना देवत बाड़ू।

"भूल हो गइल। विवेक के तराजू अन्हार कोना में पड़ गइल रहल, बाकिर तूहे बोलऽ, हम का बेजाईं बोललीं? जब सरकार जीए भर सब सुविधा देके, ई लाइलाज छुईमुइया बेमारी के गिरफ़्त से बचे खातिर तोहरा अपन डेरा पर रहेके आगाह करललबा, तब तू डेरा से डगर में डेग भरबऽ, त का कहल जाई?"

"अउर जब बात बिना समझे-बूझे भख से भौंक देवल जाई, त?"

भजना अउर ओकर मेहरारू के बीच रोजे माफिक के नोंक-झोंक के बाद मंगला निदान में सुनयलक, के पियार-मोहबत, सहानुभूति-हमदर्दी, सब डेरे पर चाहीं। बहरा करोना ई सब ना देखेला। ऊ जेकरे भेंटाई, ओकरे
दबोच लेई। अवाजो ना होई। कहल जाला - पूरब रही के पच्छिम, सब दिशन में डेरा उत्तम। डेरा पर सब संगे रहऽ आराम से, बुलावऽ न कवनो मेहमान के। घरके भोजन के आनन्द लऽ, बाहर जाईके कदम न उठावऽ। ई घड़ी जीवन रक्षा के परीक्षा बा, घरमें रहऽ, इहे सब से अपेक्षा बा। लगे हाथ ऊ सूखल चइलावन के चीरके हाथ-हाथ भर बुकुनियाय के ओहरा देलक। ई करोना के काल में ठेकान नई बा, के कब गैस मिलल बंद हो जाई।

कुछो बोलबऽ, घर-करनीए घरके घर बनाके रखेला अउर पुरुषे के चली, त ऊ घर दपाक बनके रह जाई। ई छुईमुइया करोना आके सबके चेता देलेबा। आज ना चेतल जाई, त काल्ह रोइयो के बेरा ना रही। ई सोचके भजना चइलऽवन से दू-दू हाथ मिलाई जात रहल, के चंदा अउर देव फेर टपक अइलन स। दूनों के हाथ में रोटी के थैला अउर मुँह पर मास्क। देव हाथ के रोटी मुआइना करके बोललक, "रोटी गोल। दुनिया गोल। सब गोल-मटोल।"

भजना के मुँह से निकलल, "दुनिया गोल। जिनगी गोल। करोना गोल। मुँह पर मास्को गोल।"

"ई गोल-गोल के सीमा में सब गोल-गोल घूमेले। घूमत रहेले। जदि कोई कोईके गोल करेके ना सोची, त सुख से गोल-गोल जिही अउर अपन बखते पर गोल होई।" चंदा गोल-गोल में अपन बात गोलयलस। डेरा ही से मंगला के आवाज आइल, "बाकिर कोई लापरवाही करी भा गलत कदम उठाई, त असमये गोल हो जाई। करोना अपने से कुछ ना करी। ऊ त पंगु बा। आदमीवे ओकरा के चलावऽता अउर सब से हाथ मिलाके भा चूमा-चाटी करके ओकर राजे नई, सम्राजो स्थापित करावऽता। करोना से बचेके कवनो वाक्सें नई बा। करोना मरी त आदमी के एहतियात अउर जाँगर के गरमी से। जंगरा के, गरमी से एतना प्रतिरक्षित कर देईके चाहीं, के ई बेमारी स्वयमे दम तोड़ देई।"

सबके मगज में ई बात धँस गइल, के ई गोल दुनिया में गोल-मटोल करोना के संगे गोल-गोल होके कोई गोल ना होखे चाहीं, त एहतियात चाहेंला बरतेके, दूर-दूर रहेके, मुँहपर मास्क रखेके, नमस्ते करेके, सेल्यूट करेके, अदा वर्ज़े करेके, बाकिर गले ना मिलेके, हाथ ना मिलाईके, चूमा-चाटी ना करेके, नई त पछतइयो के अवसर ना मिली। ई दुर्लभ मानुष तन के असमये राम-राम करेके पड़ जाई। अकेले त अकेले, नौ हाथ पगहो लेले जायके पड़ जाई।

o